DEV SANSKRITI: Interdisciplinary International Journal **(2012) , 01, 21-28**

i- Jhjke 'kekZ vkpk;Z dh f'k{kk n'kZu dk eY;&mUeq[khdj.k ij izHkko % ,d v/;;u

नम्रता बिहारिया एवं अविनाश बिहारिया

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिक्षा दर्शन का मूल्य उन्मुखीकरण पर पड़ने वाले प्रभाव को देखना है। इस अध्ययन में आकस्मिक प्रतिचयन विधि द्वारा प्रज्ञा शिशु मन्दिर, सोंडका, रायगढ़ (छत्तीसगढ़) से 16 से 25 वर्ष की आयु के 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिसमें 30 छात्र एवं 30 छात्राएँ थीं। इस शोध में एक्स–पोस्ट फैक्टो रिसर्च डिजाइन का प्रयोग किया गया और आँकड़ों के संग्रहण के लिए डॉ. जी.पी.शेरी एवं प्रो. आर.पी.वर्मा द्वारा निर्मित व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण टी–परीक्षण द्वारा किया गया तथा परिणामों में यह पाया गया कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिक्षा दर्शन का विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, आर्थिक मूल्यों, ज्ञान मूल्यों, आनन्द मूल्यों व शक्ति मूल्यों पर विशेष सकारात्मक प्रभाव पड़ता है तथा लोकतांत्रिक मूल्यों, सौन्दर्य ललित कला मूल्यों, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों व स्वास्थ्य मूल्यों पर सामान्य प्रभाव पड़ता है।

कूट शब्द : शिक्षा–दर्शन एवं मूल्य–उन्मुखीकरण।

मनीषियों का अनुभव है कि सदाचारी एवं दृढ़ चरित्र का व्यक्ति अभिनन्दनीय होता है, किन्तु सदाचार से रहित चरित्रहीन व्यक्ति निन्दा के योग्य होता है। मनुष्य के उत्तम कर्म ही उसके चरित्र के उत्थान के प्रमाण हैं और उत्तम कर्मों का संचालन उनके नैतिक मूल्यों से किया जाता है।

'मूल्य' एक अमूर्त अवधारणा है। इसका संबंध व्यक्ति के भावनात्मक पक्ष से होता है जो कि उसके व्यवहार को नियंत्रित और निर्देशित करता है। पाण्डेय (2000) के अनुसार, ''कोई वस्तु अपने यथार्थ स्वरूप का बोध मूल्यों के माध्यम से कराती है तथा धर्म से च्युत् लक्षणों में वह वस्तु मूल्यहीन हो जाती है।'' मूल्यों से जीवन प्रकाशित होता है। लेकिन जिस द्रुत गति से हम आज अपने शाश्वत् मूल्यों के प्रति आस्था खोते जा रहे हैं तथा तात्कालिक जीवन को सुखी बनाने के लिए जी–तोड़ परिश्रम व प्रयत्न कर रहे हैं, वह एक असुरक्षित भविष्य का द्योतक है। आज विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक, नेता, अधिकारी, कर्मचारी आदि सभी मूल्य संकट के दौर से गुजर रहे हैं। कुछ मूल्यों को मानते हुए भी हम ग्रहण नहीं करते। कुछ मूल्यों में हमारा विश्वास ही नहीं है। हम केवल उनके अनुरूप व्यवहार करने का दिखावा करते हैं। कुछ मूल्यों पर आधारित व्यवहार हम एक परिस्थिति में प्रकट करते हैं परन्तु दूसरी परिस्थिति में नहीं। सभी मानव मूल्य अंतर्द्वन्द्व में फँसे नजर आते हैं। सभी चाहते हैं कि आधुनिक जीवन को मूल्य–आधारित बनाया जाए।

शिक्षा के एकांगी दृष्टिकोण 'साक्षर बनो और नौकरी पाओ' ने मूल्यों का संकट खड़ा कर दिया है। आज जहाँ शिक्षक, जिसे ईश्वर की मूर्ति कहा जाता था, वह अपने ही पुत्रवत् विद्यार्थियों के साथ अमानवीय व्यवहार कर रहे हैं; वहीं छात्र जो शिक्षक के भक्त हुआ करता थे, वह अपने शिक्षकों का अनादर कर रहे हैं।

इन परिस्थितियों में आज एक ऐसे 'शिक्षा दर्शन' की, एक ऐसे 'आदर्श' अर्थात् मॉडल की आवश्यकता है जो शिक्षक और विद्यार्थियों में मूल्यों को जागृत करें।

'शिक्षा दर्शन' दो शब्दों से मिलकर बना है– शिक्षा+दर्शन। इसमें शिक्षा वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति के आंतरिक विकास को समृद्ध बनाकर बाह्य विकास की बहुआयामी पृष्ठभूमि विनिर्मित करती है। वहीं दर्शन मानव जीवन की सभी समस्याओं के समाधान हेतु लक्ष्य निर्देशित दृष्टिकोण, विचार, विश्वास, मूल्य तथा मानदण्ड का निरूपण करता है (मालवीय, 2008)।

जीवन मूल्यों की शिक्षा की बातें तो बहुत है पर आचरण से शिक्षा देने वालों की कमी के फलस्वरूप यह केवल खानापूर्ति बनकर रह गया है। जैसा कि गोविन्द चातक के शब्दों में, ''नैतिक शिक्षा सिर्फ ज्ञान–दान का प्रश्न नहीं है। वह आन्तरिक आवेगों और विकृतियों के रूपान्तरण और शुद्धिकरण की विधि है। विचार देना पर्याप्त नहीं, उन्हें दूसरे की सार्वकालिक मनःस्थिति में यों स्थापित करना कि वे उसकी जीवन शैली का अंग बन जाये, जरूरी है।'' इसका समाधान देते हुए उन्होंने कहा कि ''नैतिकता कुछ सीमा तक अभ्यास, आचरण और साधना से संभव है।''

अपने युग के महान शिक्षाविद् प्लेटो ने अपनी कृति "The Laws" में मूल्य–उन्मुखी शिक्षा दर्शन के संदर्भ में लिखा है– ''शिक्षा से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो

उचित आदतों द्वारा बालकों की सहज मूल–प्रवृत्तियों को विकसित करने के लिए दिया जाता है। शिक्षा बालकों को घृणा करने वाली वस्तुओं से घृणा और प्रेम करने वाली वस्तुओं से प्रेम करना सिखाती है। यह कार्य जीवन के आरम्भ से ही प्रारम्भ हो जाना चाहिए ताकि बालक को उचित–अनुचित का ज्ञान हो जाये। बदलते युग तथा परिवेश में उसके अनुरूप शिक्षा–दीक्षा व दर्शन की आवश्यकता होती है।''

आज के भोगवादी आधुनिक युग में भी विद्वान एक नवीन शिक्षा दर्शन की खोज कर रहे हैं। स्वामी विवेकानन्द, एम.के.गांधी, डॉ. एस. राधाकृष्णन, रवीन्द्रनाथ टैगोर, श्रीअरविन्द, जे. कृष्णमूर्ति, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य आदि विद्वानों ने युगानुकूल शिक्षा–दर्शन प्रस्तुत किये, जिनके अनुप्रयोग अनुसंधान कुछ संस्थानों के माध्यम से हो रहे हैं।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य देश की वर्तमान शिक्षा पद्धति से अनेक कारणों से असंतुष्ट थे। उनके अनुसार, ''अपने देश की शिक्षा पद्धति कुछ अजीब है। यहाँ केवल नौकरी भर कर सकने में समर्थ बाबू लोग ढाले जाते हैं। हर साल निकलने वाले इन लाखों छात्रों को नौकरी कहाँ मिले। वे बेकार घूमते हैं और लंबी–चौड़ी जो महत्वाकांक्षाएँ सँजोकर रखी गई थीं, उनकी पूर्ति न होने पर संतुलन खो बैठते हैं और तरह–तरह के उपद्रव करते है। अपना शिक्षित वर्ग, अशिक्षितों की अपेक्षा देश के लिए अधिक सिर दर्द बनता जा रहा है। इसमें बहुत बड़ा दोष शिक्षा पद्धति का है, जिसमें चरित्र गठन, भावनात्मक उत्कर्ष, विवेक का तीखापन तथा आर्थिक स्वावलंबन की दृष्टि से केवल खोखलापन दिखता है (आचार्य, 2004)।

आचार्य जी ने इस शिक्षा के दोष–परिमार्जन हेतु गायत्री तपोभूमि, मथुरा में अवस्थित युग निर्माण विद्यालय के माध्यम से नवीन शिक्षा दर्शन देश के समक्ष रखा, जो आज देव संस्कृति विश्वविद्यालय के रूप में विस्तृत रूप से साकार हो रहा है। आचार्य जी के अनुसार, ''युग निर्माण विद्यालय का प्रधान विषय जीवन जीने की कला, चरित्र गठन, मनोबल, विवेक–जागरण, समाज निर्माण जैसे तथ्यों का सांगोपांग शिक्षण और अभ्यास कराना है। साथ ही इसमें गृह उद्योगों का एक शिक्षण भी जोड़कर रखा गया है, ताकि कोई भी सुशिक्षित व्यक्ति अपने निर्वाह के लिए उपयुक्त समुचित आजीविका का उपार्जन कर सकें (आचार्य, 2004)।

पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य के अनुसार, शिक्षा जीवन का शाश्वत जीवन मूल्य है। सही शिक्षा वही है जो व्यक्ति के चेतनात्मक विकास में योगदान करे। यही नहीं विकसित व्यक्तित्व की विभूतियों का प्रकाश परिवार, समाज को भी मिलना चाहिए (ब्रह्मवर्चस, 2004) । इस तरह उनका समग्र विकास का शिक्षा दर्शन तीन बिन्दुओं पर आधारित है– व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण एवं समाज निर्माण। व्यक्ति, समाज और मूल्य को अंतर्संबंधित करते हुए राधाकमल मुकर्जी ने कहा है, ''व्यक्ति और समाज–तैरती हुई बत्ती और गहरे तेल के सदृश है, जिनके बीच चलने वाले अनन्त आदान–प्रदान से मूल्य–अनुभव की उजली, स्थिर ज्योति पनपती है जो कि हमारे नीरस और निरानन्द विश्व को निरन्तर प्रकाश और गर्माहट देती रहती है (Mukarjee, 2006)।

व्यक्ति निर्माण के संबंध में आचार्य जी लिखते हैं, ''व्यक्तिगत जीवन में आत्मबोध के संबंध में हमारी मान्यता यह होनी चाहिए कि हम सच्चिदानन्द परमेश्वर के अंश व राजकुमार हैं। उसने अपने सहायक के रूप में सृष्टि की सुन्दरता, शोभा, सुव्यवस्था स्थिर रखने के लिए हमें पैदा किया है। उसने हमें अनेकानेक विभूतियां दी हैं जिसे हमें लोकमंगल के लिए नियोजित करना है (आचार्य, 1973)।

परिवार निर्माण के संबंध में आचार्य जी लिखते हैं, ''जीवन विकास की शिक्षा का अधिकांश भाग परिवार की पाठशाला में पूर्ण होता है। परिवार के वातावरण को ही संस्कृति कहते हैं (आचार्य, 1990)। परिवार वह स्थान है जहाँ महान गुण उत्पन्न होते हैं; प्रेम का विकास होता है, न्याय और अन्याय, सत्य और असत्य, परिश्रम और आलस्य में अंतर करके बालक अच्छी आदत ग्रहण करता है। यदि परिवार का वातावरण अच्छा होता है तो व्यक्ति की विचारधारा और उसके विकास पर प्रशंसनीय प्रभाव पड़ता है। समाज निर्माण के लिए आचार्य जी ने 'धर्मतंत्र से लोक शिक्षण' नामक प्रभावी प्रयोग किया। आचार्य द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक समाज मनुष्य में देवत्व के उदय और विस्तार की चरम परिणति है। इसे मानव के वैयक्तिक एवं सामूहिक विकास का उत्कर्ष कह सकते है।

'अखिल विश्व गायत्री परिवार' पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के आचरण की प्रकाशित कृति है। 'वैज्ञानिक अध्यात्मवाद' के दर्शन के प्रणेता मूल्यों के विकास में शिक्षा और विद्या के समन्वय को आवश्यक मानते हैं; क्योंकि मात्र शिक्षा साक्षरता तो मनुष्य को निपट स्वार्थी ही बना सकती है (आचार्य, 1991)। आचार्य श्री शिक्षा व विद्या के संदर्भ में लिखते हैं कि ''ज्ञान के दो अंग हैं– एक शिक्षा, दूसरी विद्या। शिक्षा वह जो स्कूल कॉलेजों में पढ़ाई जाती है, जिसे पढ़कर लोग ग्रेजुएट, क्लर्क, डाक्टर, वकील, इंजीनियर, प्रोफेसर, अफसर आदि बनते हैं। यह जीविकोपार्जन एवं लोक व्यवहार में निपुणता प्राप्त करने के लिए है। यह आवश्यक है क्योंकि इसके बिना सांसारिक जीवन में सुस्थिरता एवं उन्नति का मार्ग नहीं खुलता। पर इससे भी आवश्यक विद्या है, जिस

ज्ञान को प्राप्त कर मनुष्य अपनी मान्यताओं, आकांक्षाओं एवं आदर्शों का निर्माण करता है, उसी ज्ञान को विद्या कहा जाता है। इसे प्राप्त करने का माध्यम स्कूल, कॉलेज नहीं वरन् स्वाध्याय एवं सत्संग है। चिन्तन और मनन से, सत्साहित्य पढ़ने से, सज्जनों के साथ रहने, उनके अभिवचन सुनने और कार्य–कलाप देखने से विद्या का आविर्भाव होता है (ब्रह्मवर्चस, 1991)।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिक्षा दर्शन का विद्यार्थियों के मूल्य–उन्मुखीकरण पर प्रभाव देखने का प्रयास किया है। यह प्रभाव उस ग्राम में देखा गया है जहाँ आचार्य जी के युग निर्माण मिशन का अनुगमन करने वालों की संख्या लगभग शत् प्रतिशत है तथा अतिरिक्त क्रियाकलाप के तहत युग निर्माण मिशन की गतिविधियाँ विद्यालय में की जाती हैं, जिसमें भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, युग निर्माण मिशन के साहित्य का स्वाध्याय, प्रज्ञा योग, ध्यान, यज्ञ आदि सम्मिलित हैं।

'kks/k fof/k

ifrn'kZ ,oa ifrp;u

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए आकस्मिक प्रतिचयन विधि से 100 विद्यार्थियों (आयु 16–25 वर्ष) का चयन किया गया। जिसमें पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय (प्रज्ञा शिशु मंदिर, सोंडका, जिला–रायगढ़, छ.ग.) से 50 विद्यार्थी (25 छात्र एवं 25 छात्राएँ) तथा अन्य ग्राम के विद्यालयों से 50 विद्यार्थी (25 छात्र एवं 25 छात्राएँ) सम्मिलित थे।

'kks/k vfHkdYi

प्रस्तुत शोध अध्ययन में घटनोत्तर अनुसंधान अभिकल्प का प्रयोग किया गया।

midj.k

प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों के मूल्य–उन्मुखीकरण के अध्ययन हेतु डॉ. जी.पी.शेरी एवं प्रो. आर.पी.वर्मा (1971) द्वारा निर्मित 'पर्सनल वैल्यू क्वैश्चनायर' (PVQ) का प्रयोग किया गया। इस मापनी द्वारा लोकतांत्रिक मूल्यों, धर्मिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, सौन्दर्यः ललित कला मूल्यों, आर्थिक मूल्यों, ज्ञान मूल्यों, आनन्द मूल्यों, शक्ति मूल्यों, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों तथा स्वास्थ्य मूल्यों का मापन किया जाता है।

fof/k

प्रस्तुत शोध अध्ययन में पं0 श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिक्षा दर्शन का विद्यार्थियों के मूल्य–उन्मुखीकरण पर प्रभाव देखने हेतु ऐसे उस ग्राम का चयन किया गया है जहाँ आचार्य जी के युग निर्माण मिशन का अनुगमन करने वालों की संख्या लगभग शत् प्रतिशत है तथा अतिरिक्त क्रियाकलाप के तहत युग निर्माण मिशन की गतिविधियाँ विद्यालय में की जाती है, जिसमें भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, युग निर्माण मिशन के साहित्य का स्वाध्याय, प्रज्ञा योग, ध्यान, यज्ञ आदि सम्मिलित हैं। आकस्मिक प्रतिचयन विधि से 100 विद्यार्थियों (आयु 16–25 वर्ष) का चयन किया गया, जिसमें पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय (प्रज्ञा शिशु मंदिर, सोंडका, जिला–रायगढ़, छ.ग.) से 50 विद्यार्थी (25 छात्र एवं 25 छात्राएँ) तथा अन्य ग्राम के विद्यालयों से 50 विद्यार्थी (25 छात्र एवं 25 छात्राएँ) सम्मिलित थे। विद्यार्थियों के मूल्य–उन्मुखीकरण के अध्ययन हेतु डॉ. जी.पी.शेरी एवं प्रो. आर.पी.वर्मा (1971) द्वारा निर्मित प्रश्नावली (PVQ) का प्रयोग किया गया। प्राप्त आँकडों की सांख्यकीय विश्लेषण हेतु टी–परीक्षण का उपयोग किया गया है।

lka[;dh; fo'ys"k.k

प्रस्तुत शोध में आँकड़ों के सांख्यकीय विश्लेषण हेतु टी–परीक्षण का उपयोग किया गया है।

ifj.kke

01½ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं अन्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बीच उनके लोकतांत्रिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

ifj.kke lkj.kh ¼1½

Nk=&Nk=k,¡ ¼16&25 o"kZ½	ifrn'kZ la[;k (N)	ikIrkad Ykksdrkaf=d eqY;		t-eqY;	lkFkZdrk Lrj
		eè;eku (M)	ekud fopyu (S.D.)		
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय	50	44.66	5.39	1.84	P > 0.05 (df = 98)
अन्य सामान्य विद्यालय	50	42.90	4.06		

परिणाम सारणी (1) से ज्ञात होता है कि t-मूल्य 1.84 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतएव शून्य परिकल्पना (1) स्वीकृत होती है।

02½ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं अन्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बीच उनके धार्मिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

ifj.kke lkj.kh ¼2½

Nk=&Nk=k,¡ ¼16&25 o"kZ½	izfrn'kZ la[;k (N)	ikIrkd /kkfeZd eY;		t-eY;	lkFkZdrk Lrj
		eè;eku (M)	ekud fopyu (S.D.)		
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय	50	58.54	7.29	6.06	P < 0.01 (df = 98)
अन्य सामान्य विद्यालय	50	49.88	6.98		

परिणाम सारणी (2) से ज्ञात होता है कि t-मूल्य 6.06 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतएव शून्य परिकल्पना (2) अस्वीकृत की जाती है।

03½ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं अन्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बीच उनके सामाजिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

ifj.kke lkj.kh ¼3½

Nk=&Nk=k,¡ ¼16&25 o"kZ½	izfrn'kZ la[;k (N)	ikIrkd lkekftd eY;		t-eY;	lkFkZdrk Lrj
		eè;eku (M)	ekud fopyu (S.D.)		
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय	50	49.62	6.82	3.22	P < 0.01 (df = 98)
अन्य सामान्य विद्यालय	50	44.76	8.19		

परिणाम सारणी (3) से ज्ञात होता है कि t-मूल्य 3.22 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतएव शून्य परिकल्पना (3) अस्वीकृत की जाती है।

04½ पं.श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं अन्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बीच उनके सौन्दर्य:ललित कला मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

ifj.kke lkj.kh ¼4½

Nk=&Nk=k,¡ ¼16&25 o"kZ½	izfrn'kZ la[;k (N)	ikIrkd lkSUn;Z yfyr dyk eY;		t-eY;	lkFkZdrk Lrj
		eè;eku (M)	ekud fopyu (S.D.)		
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय	50	51.16	5.94	0.95	P> 0.05 (df = 98)
अन्य सामान्य विद्यालय	50	50.00	6.21		

परिणाम सारणी (4) से ज्ञात होता है कि t-मूल्य 0.95 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतएव शून्य परिकल्पना (4) स्वीकृत होती है।

05½ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं अन्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बीच उनके आर्थिक मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

ifj.kke lkj.kh ¼5½

Nk=&Nk=k,¡ ¼16&25 o"k½	ifrn'k l¡[;k (N)	iklrkad vkfFkZd eqY;		t-eqY;	lkFkZdrk Lrj
		eè;eku (M)	ekud fopyu (S.D.)		
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय	50	49.88	7.46	3.07	P < 0.01 (df = 98)
अन्य सामान्य विद्यालय	50	58.88	9.54		

परिणाम सारणी (5) से ज्ञात होता है कि t-मूल्य 3.07 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतएव शून्य परिकल्पना (5) अस्वीकृत की जाती है।

06½ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं अन्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बीच उनके ज्ञान मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

ifj.kke lkj.kh ¼6½

Nk=&Nk=k,¡ ¼16&25 o"k½	ifrn'k l¡[;k (N)	iklrkad Kku eqY;		t-eqY;	lkFkZdrk Lrj
		eè;eku (M)	ekud fopyu (S.D.)		
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय	50	46.18	5.93	2.66	P < 0.01 (df = 98)
अन्य सामान्य विद्यालय	50	42.58	7.47		

परिणाम सारणी (6) से ज्ञात होता है कि ज.मूल्य 2.66 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतएव शून्य परिकल्पना (6) अस्वीकृत की जाती है।

07½ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं अन्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बीच उनके आनन्द मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

ifj.kke lkj.kh ¼7½

Nk=&Nk=k,¡ ¼16&25 o"k½	ifrn'kZ l[;k (N)	ikIrkd Hkkfrd vkuUn eY;		t-eY;	lkFkdrk Lrj
		eè;eku (M)	ekud fopyu (S.D.)		
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय	50	49.02	6.13	4.95	P < 0.01 (df = 98)
अन्य सामान्य विद्यालय	50	55.94	7.75		

परिणाम सारणी (7) से ज्ञात होता है कि t-मूल्य 4.95 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतएव शून्य परिकल्पना (7) अस्वीकृत की जाती है।

08½ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं अन्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बीच उनके शक्ति मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

ifj.kke lkj.kh&8½

Nk=&Nk=k,¡ ¼16&25 o"k½	ifrn'kZ l[;k (N)	ikIrkd 'kfDr eY;		t-eY;	lkFkdrk Lrj
		eè;eku (M)	ekud fopyu (S.D.)		
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय	50	55.26	6.47	3.42	P < 0.01 (df = 98)
अन्य सामान्य विद्यालय	50	61.42	10.98		

परिणाम सारणी (8) से ज्ञात होता है कि ज.मूल्य 3.42 है जो कि 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतएव शून्य परिकल्पना (8) अस्वीकृत की जाती है।

09½ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं अन्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बीच उनके पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

ifj.kke lkj.kh ¼9½

Nk=&Nk=k,¡ ¼16&25 o"k½	ifrn'kZ l[;k (N)	ikIrkd lkfjokfjd ifr"Bk eY;		t-eY;	lkFkdrk Lrj
		eè;eku (M)	ekud fopyu (S.D.)		
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय	50	46.76	6.55	0.56	P > 0.05 (df = 98)
अन्य सामान्य विद्यालय	50	46.06	5.88		

परिणाम सारणी (9) से ज्ञात होता है कि t-मूल्य 0.56 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतएव शून्य परिकल्पना (9) स्वीकृत होती है।

10½ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय के छात्र–छात्राओं एवं अन्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बीच उनके स्वास्थ्य मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है।

ifj.kke lkj.kh ¼10½

Nk=&Nk=k,¡ ¼16&25 o"kZ½	ifrn'kZ l[;k (N)	iklrkd		t-eY;	lkFkZdrk Lrj
		LokLF; eY;			
		eè;eku (M)	ekud fopyu (S.D.)		
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय	50	46.78	6.36	1.64	P > 0.05 (df = 98)
अन्य सामान्य विद्यालय	50	44.84	5.47		

परिणाम सारणी (10) से ज्ञात होता है कि t-मूल्य 1.64 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है। अतएव शून्य परिकल्पना (10) स्वीकृत होती है।

उपरोक्त परिणाम सारणियों 2, 3, 5, 6, 7 व 8 से स्पष्ट है कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय के छात्र–छात्राओं व अन्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं में उनके धार्मिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, आर्थिक मूल्यों, ज्ञान मूल्यों, आनन्द मूल्यों व शक्ति मूल्यों में सार्थक अंतर है अर्थात् पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन का प्रभाव छात्र–छात्राओं के धार्मिक मूल्यों, सामाजिक मूल्यों, आर्थिक मूल्यों, ज्ञान मूल्यों, आनन्द मूल्यों व शक्ति मूल्यों पर सार्थक रूप से पड़ता है। परिणाम सारणियों 1, 4, 9 व 10 से स्पष्ट होता है कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन से प्रभावित विद्यालय के छात्र–छात्राएँ, अन्य विद्यालयों के छात्र–छात्राओं से उनके लोकतांत्रिक मूल्यों, सौन्दर्यःललित कला मूल्यों, पारिवारिक प्रतिष्ठा मूल्यों एवं स्वास्थ्य मूल्यों में कुछ अधिक उन्मुखता दर्शाते हैं; परन्तु सार्थक रूप से नहीं।

foopuk

आज की समस्याएँ जीवन शैली और जीवन मूल्यों को लेकर ही है। जहाँ आज व्यक्ति रोग–शोक और कष्टों से व्यथित है और इनसे मुक्ति की चाह उसके मन में रहती है, लेकिन आदर्शों एवं सिद्धान्तों का व्यवहारिक न बन पाना उन्हें अनुशासनहीनता की मजबूरी से ग्रस्त कर देता है। व्यक्ति का जीवन, जीवन शैली की सुव्यवस्था अर्थात् प्रबंधन से तथा मूल्यों को जीवन में आत्मसात् करने से सफल बनता है। वह शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य को प्राप्त करता है।

उपरोक्त सभी परिणामों से स्पष्ट होता हैं कि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के शिक्षा दर्शन का छात्र–छात्राओं के मुल्य–उन्मुखीकरण पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। इन सभी परिणामों का कारण आचार्य जी के शिक्षा दर्शन की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि तथा उनके दर्शन से प्रभावित छात्र–छात्राओं की स्वाध्याय, सत्संग तथा अन्य धार्मिक प्रक्रियाओं (नित्य प्रार्थना, यज्ञ एवं मंत्रजप) में भावनात्मक रूचि तथा संलग्नता है। स्वाध्याय, सत्संग तथा अन्य धार्मिक प्रक्रियाओं से छात्र–छात्राओं की संज्ञानात्मक तथा भावनात्मक पक्ष पर गहरा प्रभाव पड़ा है, जिसके कारण यह छात्र–छात्राओं के संज्ञानात्मक संरचना को परिवर्तित करने में सहायक हुआ है। इसी के परिणाम स्वरूप छात्र–छात्राओं के मूल्य उन्मुखता पर सार्थक प्रभाव पड़ा है। प्रस्तुत परिणाम अरोड़ा (2008) के परिणामों के अनुरूप है, जिन्होंने अपने अध्ययन में आचार्य जी के दर्शन का विद्यार्थियों के व्यक्तिगत मूल्यों, व्यक्तिव के विभिन्न पहलुओं (बहिर्मुखता एवं स्नायुविकृति) तथा शैक्षिक आकांक्षा के विभिन्न स्तरों पर सार्थक प्रभाव पाया था। कुमार (2006) ने अपने एक शोध अध्ययन, जिसमें उन्होंने मिशन की गतिविधियों से प्रभावित ग्रामों के लोगों की जीवन शैली के सर्वेक्षण के फलस्वरूप यह परिणाम पाया था कि उन ग्रामों के आधे से अधिक प्रतिशत लोग अपनी जीवन शैली में प्रतिदिन गायत्री मंत्र जप, ध्यान, यज्ञ को स्थान देने के साथ ही विभिन्न अच्छी आदतों को अपनाते तथा बुरी आदतों को छोड़ने में प्रयत्नशील रहते हैं।

नम्रता बिहारिया, पी–एच.डी., असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, किरोडिमल गौर्नमेंट कॉलेज, रायगढ़, छत्तीसगढ़, भारत; अविनाश बिहारिया, पी–एच.डी., काउन्सलर, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, बैतूल, भारत।

lnHk lph

vjkjk] eerk ¼2008½ *आचार्य श्रीराम शर्मा का सर्वांग शिक्षा दर्शन एवं उनके शिक्षा संबंधी प्रयोगों का मूल्याँकन (अप्रकाशित पी–एच.डी. शोध)*। कानपुर : शिक्षा विभाग, महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय।

vkpk;] Jhjke 'kek ¼1973½ *;ग निर्माण की रूपरेखा एवं कार्यपद्धति*। मथुरा : युग निर्माण योजना प्रकाषन, पृ.14

vkpk;] Jhjke 'kek ¼1990½ *परिवार और उसका निर्माण (द्वितीय संस्करण)*। मथुरा:युग निर्माण योजना प्रकाषन, पृ.10

vkpk;] Jhjke 'kek ¼1991½ *शिक्षा ही नहीं विद्या भी*। हरिद्वार : शांतिकुन्ज, पृ. 5

vkpk;] Jhjke 'kek ¼2004½ *नैतिक शिक्षा (भाग–2)*। मथुरा : युग निर्माण योजना प्रकाषन।

ik.M;] jke'kdy ¼2000½ *मूल्य शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में* । मेरठ : सूर्या पब्लिकेशन, पृ. 52

cãopl ¼1991½ *शिक्षा और विद्या का सार्थक समन्वित स्वरूप*। हरिद्वार : शांतिकुन्ज, पृ.15–16

cãopl ¼1998½ *शिक्षा एवं विद्या*। मथुरा : अखण्ड ज्योति संस्थान, पृष्ठ–1.8

ekyoh;] jktho ¼2008½ *शिक्षा दर्शन एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि*। इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भण्डार, पृ.17

Kumar, A. (2006) *Rural Social Transformation: A Study of the Impact of Yug Nirman Mission Movement (Unpublished Ph.D Thesis).* Meerut: Department of Sociology, Chaudhary Charan Singh University.

Mukarjee, R. (2006) A General Theory of Society. In V.L. Sharma & V.K. Maheshwari (Ed.). *Paryavaran aur Manav Mulyo ke liye Shiksha.* Meerut: R. Lal Publication, p. 110.

Plato (1997) The Laws. In R. Dubey (Ed.). *Vishwa ke Kuchh Mahan Shiksha Shastri.* Meerut: Minakshi Prakashan, p. 4.